IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिकसन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन

शोध निर्देशिका
डॉ. मीनाक्षी मीणा
एसोसिएट प्रोफेसर

शोधार्थी
दिव्या चण्डहोक.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर।
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

सार

संसार के समस्त प्राणियों में मानव सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है। जन्म से ही मानव चेतन परिस्थितियों के प्रभाव के कारण चिन्तनशील होता है। जिसके कारण वह इच्छायें प्रकट करता है। आकांक्षा के कारण ही वह आसपास के व्यक्तियों एवं वस्तुओं को देखकर स्वाभाविक रूप से क्रियाशील रहता है। मानव जन्म से ही जिज्ञासु रहता है। यदि मनुष्य के अन्दर आकांक्षायें समाप्त कर दी जायें तो उसका जीवन स्थिर सदृश्य हो जायेगा। आकांक्षा ही मनुष्य को जीवन स्तर में सुधार हेतु प्रेरित करती है। आकांक्षा के कारण ही मनुष्य चाहे किसी भी समाज से संबद्ध हो, किसी भी कार्य को संपादित करता है। शिक्षा का समुचित विकास वर्तमान वैश्विक दुनिया की सबसे बड़ी आश्यकता है और इस आवश्यकता से राष्ट्र विकास की पूँजी को सुदृढ़ भी किया जा सकता है और उन्नत भी किन्तु इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि शिक्षक सक्रिय भागीदारी करे वह भी प्रसन्नता के साथ यह तभी सम्भव है जब शिक्षक अपने कार्य या व्यवसाय से सन्तुष्ट हो। अतः यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक की व्यावसायिक सन्तुष्टि कैसी है? इस कारण से अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई तथा ''प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन'' किया गया। शोध का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन एवं प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चर (लिंग भेद) के संदर्भ में अध्ययन करना रहा। अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।निष्कर्षतः प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का मान औसत से अधिक पाया गया। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कुल व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समस्त आयामों व्यवसाय की प्रवृत्ति ,व्यवसाय की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति तथा संस्था की प्रवृत्ति का मान औसत से अधिक पाया गया। तथा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं आयामों पर शिक्षक लिंग भेद का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

की शब्दः– आकांक्षा स्तर, व्यावसायिक सन्तुष्टि, शिक्षक, लिंग भेद।

1.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय विकास एवं समृद्धि में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय निवेश है। यह राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक आधार प्रदान करता है। यह व्यक्तियों में उच्च सामाजिक एवं व्यावसायिक कौशलों को विकसित करता है। भारत जैसे विकसित देश में शिक्षा के बिना उपयुक्त विकास असंभव है। इसीलिए संपूर्ण भारतवर्ष में शिक्षा के प्रसार के लिए सरकार प्रयासरत हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई लालसा या अभिलाषा अवष्य होती है जो कि उच्च या निम्न स्तर की हो सकती है, इसी आधार पर इन्हें यथार्थवादी या निराषावादी की श्रेणी में रखते हैं। किसी भी क्षेत्र में कुछ करने या दिखाने की आकांक्षा जिस व्यक्ति में विद्यमान रहती है, उसे आकांक्षी या महत्त्वाकांक्षी कहते हैं। इससे ही व्यक्ति की आकांक्षा का स्तर प्राप्त होता है।

आकांक्षा के प्रत्यय को सर्वप्रथम होप (**1930**) तथा डेम्पे (**1931**) ने दिया। आकांक्षा एक व्यक्तिगत सामाजिक प्रेरक है जो व्यक्ति को एक निष्चित सीमा तक लक्ष्य निर्धारित करने एवं उसके अनुकूल कार्य करने के लिये प्रेरित करती है।

आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा सन्निहित रहती है। आकांक्षा से यह ज्ञान नहीं होता है कि मानव अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा। इससे केवल यह स्पष्ट होता है कि वह क्या प्राप्त करना चाहता है व उसका लक्ष्य क्या है। आकांक्षा एक उच्च आदर्श होती है जिसकी सभी लालसा तो रखते हैं, मगर जरूरी नहीं कि वह प्राप्त हो।

सफलता एवं असफलता भी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिसका सम्बन्ध सामान्यतया प्रायिकता से है। जिसमें एक के होने पर दूसरे का स्वयं लोप होना अनिवार्य है। सम्पूर्ण सृष्टि में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसको एक विलक्षण गुण प्राप्त है जिसके बल पर वह आदिम मानव से डिजिटल मानव तक पहुँच कर न केवल पृथ्वी पर बल्कि सम्पूर्ण जगत की ओर द्रुत गति से बढ़ रहा है।

कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें एक निश्चित लक्ष्य या प्रवीणता प्राप्त करना चाहता है। लक्ष्य एवं आकांक्षायें व्यक्ति की क्षमताओं के अनुरुप, उससे उच्च अथवा निम्न हो सकती हैं। कुछ व्यक्ति अपनी निष्पत्ति का उच्च प्राक्कलन करते हैं तथा कुछ व्यक्ति न्यून प्राक्कलन करते हैं। कई लोग जो अपनी बौद्धिक क्षमता से अपरिचित होते हैं लेकिन उच्च आकांक्षा रखते हैं वे अक्सर नैराश्य का अनुभव करते हैं। किसी व्यक्ति के आकांक्षा स्तर का वर्णन करने में वास्तव में हम उस व्यक्ति का ही वर्णन करते हैं। यह व्यक्ति के भविष्य या भूत का पूर्वाभिमुखीकरण उसका स्वयं में आत्मविश्वास, असफलता का भय, आशावाद या निराशावाद, उसकी महत्वाकांक्षायें तथा वास्तविकता का सामना करने का साहस है। आकांक्षा स्तर व्यक्ति का पूर्व अनुभवों के आधार पर भावी निष्पत्ति के लिए अपनी क्षमता का आकलन (अधिक, कम या वास्तविकतापूर्ण) है। लक्ष्य निर्धारक व्यवहार के साथ – साथ लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया व्यक्ति के पूर्व अनुभवों (सफलता–उन्मुख असफलता–उन्मुख), इस दिशा में किये गये प्रयास स्तर तथा लक्ष्य के लिए लगे रहने की व्यक्ति की क्षमता का परिणाम है। अतः आकांक्षा स्तर की परिस्थिति में मुख्य रुप से चार बिन्दु आते हैं–

1.पिछली निष्पत्ति।

2.अगली निष्पत्ति के लिए आकांक्षा स्तर का निर्धारण।

3.नयी निष्पत्ति।

4.नयी निष्पत्ति के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया।

पिछली निष्पत्ति तथा नये लक्ष्य के अन्तर को 'लक्ष्य असंगति' कहा जाता है जबकि लक्ष्य स्तर तथा नयी निष्पत्ति के मध्य अन्तर को 'उपलब्धि असंगति' कहा जाता है। जितनी अधिक असंगति चाहे लक्ष्य या उपलब्धि में होगी, लक्ष्य प्राप्ति की संभावना उतनी ही कम होगी और व्यक्ति उतना ही अधिक निराशा का अनुभव करेगा। अतः अधिकतम संतुष्टि न तो उच्च आंकलन से और न ही निम्न आंकलन से प्राप्त होती है बल्कि वास्तविकतायुक्त आकलन से प्राप्त होती है जिसमें लक्ष्य अथवा उपलब्धि असंगति न्यूनतम होती है, प्राप्त होती है। व्यक्ति जहाँ तक पहुँच सकता है उसकी तुलना में निर्धारित लक्ष्य अगर बहुत ऊँचा है तो व्यक्ति की असफलता का कोई अर्थ नहीं है। इसी तरह बिना किसी कठिनाई के व्यक्ति जहाँ तक पहुँच सकता है अगर निर्धारित लक्ष्य उससे बहुत कम है तो भी सफलता का कोई अर्थ नहीं है। अतः उस व्यक्ति का आकांक्षा स्तर उस प्रसार के अन्तर्गत आता है जहाँ वह यह महसूस करता है कि वह सफल होगा अथवा असफल।

कुछ लोगों की महत्वाकांक्षा काफी उच्च स्तर की होती है, कुछ की सामान्य, कुछ की अत्यन्त निम्न स्तर की होती है। कुछ लोग अपनी सफलता या असफलता के अनुभवों के अनुरुप अपने आकांक्षा स्तर को जल्दी परिवर्तित करते हैं तो कुछ लोग लगातार असफल होने के बावजूद भी अपने ऊँचे लक्ष्य से चिपके रहते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि मानव व्यवहार तथा व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति प्रभावों के संदर्भ में आकांक्षा स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आकांक्षा स्तर का सीधा सम्बन्ध संतुष्टि से होता है। शिक्षा के उद्देश्य कितने ही श्रेष्ठ और महान क्यों न हो, पाठ्यक्रम कितना ही उपयोगी, अग्रदर्शी लोकतांत्रिक लचीला और व्यापक क्यों न हो, शिक्षण विधियाँ कितनी ही मनोवैज्ञानिक और छात्रोपयोगी क्यों न हो, शिक्षण सामग्री कितनी ही प्रभावशाली क्यों न हो, अनुशासन कितना ही उत्तम क्यों न हो, विद्यालय भवन कितना ही भव्य क्यों न हो, विद्यालय में भौतिक सुविधाएँ कितनी ही क्यों न उपलब्ध हो, यदि अध्यापक प्रभावशाली नही हैं, अपने विषय का विशेषज्ञ नहीं है, उसे अपने कार्य में रूचि नहीं है और उसका दृष्टिकोण व्यापक नहीं है तो शिक्षण की प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती। जैसा कि अध्यापक को राष्ट्र निर्माता, उत्तम नागरिको ं का निमार्ता, शिक्षण प्रक्रिया की आधारशिला, समाज का पथ–प्रदर्शक, आदि सब कुछ माना जाता है और कहा भी जाता है। ऐसे में विद्यालय के शिक्षकों में सामान्यतः निम्न गुणों या विशेषताएँ अपेक्षित है। इनके अर्जन से विद्यालय के शिक्षक व सभी शिक्षकों को सफलता, ख्याति, सर्वप्रियता तथा आत्मसन्तुष्टि प्राप्त होती है और वह राष्ट्र सेवा में भी सक्षम होते है।

- बालकों को समझने की योग्यता एवं कुशलता।
- स्वयं की शैक्षिक एवं शिक्षण योग्यताएँ।
- बालकों के साथ कार्य करने तथा समायोजन की क्षमता।
- कार्य करने की इच्छाशक्ति।
- सहयोग, सद्भावना, निष्पक्षता तथा नेतृत्व की क्षमता।
- धैर्यवान व संवेगात्मक रूप से स्थिर।
- मनोविज्ञान का ज्ञाता।

शिक्षा का समुचित विकास वर्तमान वैश्विक दुनिया की सबसे बड़ी आश्यकता है और इस आवश्यकता से राष्ट्र विकास की पूँजी को सुदृढ़ भी किया जा सकता है और उन्नत भी किन्तु इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि शिक्षक सक्रिय भागीदारी करे वह भी प्रसन्नता के साथ यह तभी सम्भव है जब शिक्षक अपने कार्य या व्यवसाय से सन्तुष्ट हो। अतः यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक की व्यावसायिक सन्तुष्टि कैसी है? इसतिए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध में प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावयायिक संतुष्टि से सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया है।

1.2 शोध की आवश्यकता

शिक्षा ही मानव जीवन की वास्तविक आधारशीला है। शिक्षा के सभी स्तरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिक शिक्षा है प्राथमिक शिक्षा रूपी नींव के ऊपर ही सम्पूर्ण शिक्षारूपी इमारत खड़ी होती हे जिस प्रकार मजबूत नींव के अभाव में मजबूत इमारत का कल्पना नहीं की जा सकती है। उसी प्रकार सुदृढ़ प्राथमिक शिक्षा के अभाव में सुदृढ़ उच्च शिक्षा की कल्पना भी नही की जा सकती। अतः शिक्षा को सुदृढ़ बनाना समाज की प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है इसके लिए हमें अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है जो हमारे समाज का निर्माण कर सके।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि – ''हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो चरित्रवान, मानसिक,रूप से उत्तम बुद्विमान, मूल्यवान नागरिक दे सकें, जिससे वह वह नागरिक अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।''

इसके लिए अध्यापक का व्यावसायिक रूप से सन्तुष्ट होना बहुत जरूरी है क्योंकि:–

1.आज निजी संस्थाओं में अध्यापक अध्यापन कार्यो से सन्तुष्ट नही है क्योंकि इन संस्थाओं के द्वारा उनको दिया जाने वाला वेतन अन्य देशों व राज्यों की तुलना में बहुत कम है जिससे अध्यापक अपने अध्यापन कार्यो के प्रति पूर्णतया सन्तुष्ट नही है और यह अपने कार्यो से विमुख होते जा रहे है।

2. शिक्षण संस्थानों में उचित वातावरण का नही होना क्योकि राजकीय संस्थानों में व निजी संस्थानों पर राजनैतिक प्रभाव अधिक बढ़ता जा रहा है स्थानान्तरण की स्थिति अध्यापकों के सिर पर लटकती रहती है।

3.वर्तमान युग में व्यक्ति का आकांक्षा स्तर भी उसकी कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करता है, क्योंकि उच्च शिक्षा का स्तर रखने वाले व्यक्ति अपनी पद व कार्य के अनुरूप आय व सुविधाओं से सन्तुष्ट नहीं हो पाते है। जिन अध्यापकों का आकांक्षा स्तर उच्च होता है वह अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं होते।

इस कारण से अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई कि ''प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन'' किया जाये।

1.3 समस्या कथन

''प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन''

1.4 शोध के उद्देश्य

शोधपत्र के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

2. प्राथमिक शिक्षकों के ब एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चर (लिंग भेद) के संदर्भ में अध्ययन करना।

1.5 शोध की परिकल्पनाएँ

शोधार्थी ने प्रस्तावित शोध में प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन को ज्ञात करने के लिए निम्न परिकल्पनाएँ बनाई गई है।

1. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों का मान औसत स्तर का है।

2. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के मान का लिंग भेद (महिला अध्यापिकाओं एवं पुरूष अध्यापक) के सन्दर्भ में सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

3. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि औसत स्तर का है।

4. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का लिंग भेद (महिला अध्यापिकाओं एवं पुरूष अध्यापक) के सन्दर्भ में सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

1.6 शोध में प्रयुक्त शब्दावली

1.आकांक्षा – जहाँ जीवन है वहां आकांक्षा है मानव जीवन एक रहस्य है। आकांक्षा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति का अलग अलग हाता है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में कुछ भावनाएँ व इच्छाएँ छिपी रहती है जिनको वह पूर्ण करना चाहता है आकांक्षा का स्तर उच्च व व्यापक होता है। आकांक्षा का स्तर स्वाहित के साथ मानवहित से भी होता है। आकांक्षाएँ वह दर्पण है जिनसे समाज का सही रूप प्रतिबिम्बित होता है आकांक्षा किसी भी समाज की सोच व स्तर क आभास को स्पष्ट करती है।

2.व्यावसायिक सन्तुष्टि–व्यावसायिक सन्तुष्टि व्यक्ति विशेष की उस मनोवृत्ति को प्रस्तुत करती है जो किसी कार्य विशेष के सम्पादन के फलस्वरूप अभिव्यक्त होती है और प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य के परिणाम को प्रभावित करती है।
यहाँ व्यावसायिक सन्तुष्टि से तात्पर्य–''कार्य करने वाले व्यक्ति की सप्तुष्टि से होता है। व्यावसायिक सन्तुष्टि एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि का स्त्रोत होती है। जिसका कार्य करने वाले व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है।''

मास्लॉव (**1954**) के अनुसार– आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं में व्यक्ति की छः प्राथमिकाएँ होती है उनमें मानसिकआवश्यकता का आधार तैयार करती है। मानसिक आवश्यकता सभी आवयकताओं से महत्वपूर्ण है जब वह मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है तो वह अन्य आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की कोशिश करता है जो निम्न क्रम में हो सकती है जैसेः– सुरक्षा, प्यार और रूप की। इस प्रकार सन्तुष्टि का परिणाम इस प्रकार की आवश्यकताओं को प्राप्त करना होता है।
लिंगभेद– राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

1.7 शोध में प्रयुक्त चर

आक्षित चर – आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक सन्तुष्टि।
स्वतंत्र चर – लिंग भेद ।

1.8 शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

समयाभाव व धनाभाव एवं आय सीमित साधनो के कारण शोध को परिसीमित किया गया है।

1. शोध अध्ययन हेतु केवल अजमेर जिले के महिला व पुरूष अध्यापकों को लिया गया।

2. यह विद्यालयों में कार्यरत **320** शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया।

3. इस अध्ययन में केवल प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का ही अध्ययन किया गया।

1.9 शोध विधि– प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

1.10 न्यादर्श – किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह संभव नही है कि पूरी जनसंख्या के समग्र व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके इसीलिए जनसंख्या में से कुछ ऐसी इकाईयों का चयन कर लेते है जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करें और जिन पर किए गए अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सकें।

न्यादर्श– शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में अजमेर जिले के विद्यालयों में कार्यरत **320** महिला व पुरूष अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

1.11 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में एक मानकीकृत एवं एक स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया।

1. आकांक्षा स्तर के स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। ।

2. डा. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण अध्यापक व्यावसायिक सन्तोष प्रश्नावली।

1.12 साख्यिकी विधियाँ

इस शोध कार्य में मध्यमान, मानक विचलन व टी टेस्ट का उपयोग किया गया है।

1.13 वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष

कार्य समाप्ति के पश्चात परिणाम अथवा निष्कर्ष निकाला जाता है एवं उसके गुण एवं दोषों का पता लगाया जाता है। वर्तमान शोध कार्य के प्रभाव को जानने के लिए निष्कर्षो का वर्णन किया गया है –

1.13.1 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन

1.13.1.1 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का विश्लेषण :–

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कुल आकांक्षा स्तर एवं उसके आयामों यथारू आदर्श/सर्वश्रेष्ठ अध्यापक एवं उत्तरदायित्वपूर्ति की आकांक्षा, विषय विशेषज्ञता एवं नवाचार की आकांक्षा, सामाजिक पहचान की आकांक्षा, विद्यार्थियों के विकास की आकांक्षा तथा पारिवारिक संतुष्टि की आकांक्षा का मान औसत से अधिक हैं।
- परिकल्पना संख्या–**1** अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में आकांक्षा स्तर मापनी एवं समस्त आयामों पर प्राप्तांकों का मध्यमान औसत स्तर का है।

1.13.1.2 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर पर शिक्षक लिंगभेद के प्रभाव का विश्लेषणः–

- प्राप्त मध्यमानों में से पुरुष शिक्षकों की आकांक्षा स्तर मापनी एवं उसके समस्त आयामों यथा विषय विशेषज्ञता एवं नवाचार की आकांक्षा, विद्यार्थियों के विकास की आकांक्षा तथा पारिवारिक संतुष्टि की आकांक्षा के मध्यमान के प्राप्तांकों का मान महिला शिक्षिकाओं से अधिक है। जबकि आदर्श/सर्वश्रेष्ठ अध्यापक एवं उत्तरदायित्वपूर्ति की आकांक्षा एवं सामाजिक पहचान की आकांक्षा आयाम के प्राप्तांकों में महिला शिक्षिकाओं का मान पुरुष शिक्षकों से अधिक है।
- प्राथमिक विद्यालयों के कुल आकांक्षा स्तर एवं उसके समस्त आयामों यथारू आदर्श/सर्वश्रेष्ठ अध्यापक एवं उत्तरदायित्वपूर्ति की आकांक्षा, विषय विशेषज्ञता एवं नवाचार की आकांक्षा, सामाजिक पहचान की आकांक्षा, विद्यार्थियों के विकास की आकांक्षा तथा पारिवारिक संतुष्टि की के प्राप्तांकों पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
- परिकल्पना संख्या–**2** चयनित की जाती है जिसके अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं समस्त आयामों पर शिक्षक लिंग भेद का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

1.13.2 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन

1.13.2.1 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का विश्लेषणः–

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कुल व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समस्त आयामों व्यवसाय की प्रवृत्ति ,व्यवसाय की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति तथा संस्था की प्रवृत्ति का मान औसत से अधिक हैं।
- परिकल्पना संख्या–**3** अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समस्त आयामों पर प्राप्तांकों का मध्यमान औसत स्तर का है।

1.13.2.2 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर शिक्षक लिंगभेद के प्रभाव का विश्लेषणः–

- प्राप्त मध्यमानों में से महिला शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं उसके समस्त आयामों यथा व्यवसाय की प्रवृत्ति ,व्यवसाय की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति एवं संस्था की प्रवृत्ति का मध्यमान पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के मध्यमान से अधिक है।
- प्राथमिक विद्यालयों के कुल व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं विभिन्न आयामों यथाः व्यवसाय की प्रवृत्ति ,व्यवसाय की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति एवं संस्था की प्रवृत्ति के प्राप्तांकों पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
- परिकल्पना संख्या–**4** चयनित की जाती है जिसके अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं आयामों पर शिक्षक लिंग भेद का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आचार्य पल्लवी (**2015**). इफेक्ट्स ऑफ स्कूल्स, सेक्स एण्ड पर्सनल्टी ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सैकण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ. एम.पी. निमार एज्यूकेशन रिव्यू इंटरनेशनल. **1** (**1**). **1–4**.
- ओपडेनक्केर एण्ड डेम (**2006**). टीचर केरेक्टेरेस्टिक्स एण्ड टिचींग स्टाइल्स एज इफेक्टिव फैक्टर्स ऑफ क्लासरूम प्रेक्टिस. ''टीचर एण्ड टीचर एजुकेशन''. **22** (**1**). **1–21**.
- बरोदास सुभद्रा एवं पंडा भूषण भिभूति (**2014**). रिलेशनशिप बिट्विन मेंटल हेल्थ एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन अमोंग प्राइमरी स्कूल टीचर्स. अभिनव नेशनल मंथली रिफ्रीड जर्नल ऑफ रिसर्च इन कोमर्स एण्ड मैनेजमेन्ट. **3** (**8**). **15–25**.
- बाबु, डी. राम. (**2014**). आन्ध्रप्रदेश के तेलांगना क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षुओं में मानसिक स्वास्थ्य. जर्नल ऑफ कम्प्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसच.**31** (**1**).**57–60**.
- बसु, सराह (**2014**). माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत षिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. जीसीटीइ जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एक्सटेंषन इन एजुकेषन. **9**(**1**). **99**.
- बिड़ीयानी, आई. एम. (**2015**). ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सैकण्डरी स्कूल टीचर्स. रिसर्च इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी. रिसर्च जर्नल (त्म्प्डत्श्र). **2** (**4**).**1–4**.
- बघेला, एच.एस. (**2005**) .शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा .जयपुररू राजस्थान प्रकाशन .
- दीक्षित, मोहित (**2013**). सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पंचायती राज में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन. विद्या शोध. ए. बिलगुल एवं बेनुअल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड स्लाइड् ह्यूमनिटीज. **1** (**1**). **1–6**.
- इकेह, पी.यू. एवं ओलेडो, ओ.टी. (**2011**). इमोशनल इन्टेलीजेन्सी एण्ड लीडरशिप एक्सेस ऑफ सैकण्डरी स्कूल रिवर्स स्टेट. नाइजीरिया. इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लनरी. **5** (**5**). **382–393**.
- इस्माइल अबेसनजीद अबोलफजल फराहनी, नरवेल आजम (**2013**). द रिलेशन बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्सी एण्ड जॉब स्ट्रेस इन टीचर्स ऑफ फिजिकल एज्यूकेशन एण्ड नॉन फिजिकल एज्युकेशन. एडवांस इन एनार्वनमेंटल बाएलॉजी. **1**(**8**). **1386–1394**.
- गोस्वामी (**2003**). सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थी अध्यापकों पीएच.डी. शिक्षा. वनस्थली विद्यापीठ का सम्प्रत्ययात्मक विकास एवं स्व.विकास पर प्रभाव.

- गलगोत्रा, मोहन (**2013**). मेन्टल हेल्थ ऑफ हाई स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू देयर सेक्स एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटी एण्ड सोशल साइंस इन्विन्शन. **2** (**1**). **20–23**.
- जोशी, सुरेश के जे. एवं वी. पी. (**2008**). शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और दबाव के सम्बन्ध में अध्ययन. जर्नल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च.नील कमल पब्लिकेशन. **57–61**.
- सिंह, रामपाल एवं सेवानी,अशोक (**2014**). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी . आगरारू अग्रवाल पब्लिकेशन्स .
- श्रीवास्तव, एस. के. (**2003**). एन असेंसमेन्ट ऑफ पर्सनल्टी एण्ड मेंटल हेल्थ अमोंग प्राइमरी एण्ड सैकण्डरी टीचर्स.द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलोजी,
- श्रीवास्तव, बी. (**2003**). स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ वेल्यूज एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन अमोंग टीचर्स ऑफ हिन्दी एण्ड इंग्लिश मीडियम स्कूल्स. इण्डियन एज्यूकेनशल एब्सट्रेक्ट. **4** (**2**). एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली.
- श्रीवास्तव, वन्दना (**2006**). शिक्षकों के कार्यसंतोष एवं जीवन संतुष्टि का अध्ययन. प्रकाशित शोध प्रबन्ध. शिक्षा सकाय. लखनऊ विश्वविद्यालय.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation